4 स्थानीय बाज़ार

क्रियाकलाप 4.1

मूल्य निर्धारण की समस्या

कक्षा–11

समय–एक कालांश

नीचे दिए गए अनुच्छेदों को पढ़िए। वे यह समझने में आपकी मदद करेंगे कि शिल्पकारों को विभिन्न परिस्थितियों में अपने उत्पादों की कीमत निर्धारित करते समय किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शिल्प का वास्तविक मूल्य

उत्कृष्ट शिल्पकारी का आकलन शिल्प में प्रयुक्त सामग्री की कीमत, उनके वज़न या आकार से नहीं किया जा सकता और न ही उसे केवल प्राप्त ज्ञान के आयाम से मापा जा सकता है।

जब कोई व्यक्ति स्वयं अपने लिए या परिवार के लिए किसी सुंदर वस्तु की रचना कर रहा होता है तब एक अलग ही ऊर्जा कार्यशील होती है– सोद्देश्य किंतु आर्थिक लाभ-हानि की भावना से परे। इसी भावना ने सदैव ही कलाकारों को अपनी कारीगरी में प्रवीणता प्राप्त करने और भव्य वस्तुएँ बनाने के लिए प्रेरित किया है। अपने प्रयास को पराकाष्ठा तक ले जाने के लिए एकाग्रता और असीम धैर्य के साथ रचना का आनंद उनके जीवन में सौंदर्य की प्रचुरता लाता है। महान सच्चाइयाँ दैनिक जीवन की छोटी-छोटी वस्तुओं में श्रेष्ठता के माध्यम से ही कायम रहती हैं।

हस्तशिल्प न केवल सुंदर विरासत के रूप में मूल्यवान है, बल्कि इसलिए भी कि हम उनके साथ जीना, उन्हें छूना, महसूस करना, प्रयोग करना तथा उनके साथ घनिष्ठ संबंध बनाना चाहते हैं, ताकि उनके लालित्य से हमारा जीवन भी संपन्न हो जाए।

–कमलादेवी चट्टोपाध्याय

हमारे देश में बहुमूल्य धातुओं से बनी अधिकांश वस्तुएँ पारंपरिक रूप से तोल कर बेची जाती थीं, अब भी प्राय: यही स्थिति है। इसका अर्थ है कि अधिकांशत: कारीगरी की कीमत पर विचार नहीं किया जाता था। चाँदी,

मेले में उत्पाद बेचते हुए शिल्पकार, मध्य प्रदेश

सोने आदि की बाज़ार दरें दोनों पक्षों को ज्ञात होती थीं। और किसी वस्तु की कीमत तय करने में दोनों पक्षों के व्यापारी परस्पर स्वीकार्य लाभ का प्रतिशत जोड़ते थे। यह प्रतिशत काम की गुणवत्ता के आधार पर भिन्न-भिन्न होता था।

यद्यपि अत्युत्तम कार्य के लिए अधिक मूल्य निर्धारित किया जाता था, तथापि स्वर्णकार तथा रजतकार के कौशल को बहुत कम महत्त्व दिया जाता था। उसके साथ किसी मज़दूर जैसा ही व्यवहार किया जाता था। यह पश्चिम से बिलकुल उलट है, जहाँ कारीगरी की कीमत प्रायः उस द्रव्य की मूल कीमत से अधिक होती है जिस पर काम किया गया है। तैयार वस्तु का कलात्मक मूल्य उसकी खुदरा कीमत (retail price) में परिलिखत होता है। इसके बावजूद भारत में बहुमूल्य धातुओं को लोकप्रिय बनाने के लिए बड़ी मात्रा में परिकार तथा अनेक तकनीकों का विकास हुआ।

मेला आयोजित करने का क्या उद्देश्य है?

लघु कार्यों के लिए सुझाए गए विषय

1. स्थानीय बाज़ार जाकर विभिन्न शिल्पकारों से चर्चा करें कि वे अपने उत्पादों के लिए कच्ची सामग्री कैसे प्राप्त करते हैं और इस भेंट-वार्ता को लिख लें। यह जानकारी उस उत्पाद की कीमत तय करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
   - विभिन्न शिल्पकार अपने उत्पादों की कीमत कैसे तय करते हैं?
   - वे स्वयं अपनी कारीगरी का मूल्य निर्धारण कैसे करते हैं?
2. किसी स्थानीय हाट या मेले में जाइए और एक प्रकार के द्रव्य (जैसे मिट्टी) और उससे बने विभिन्न उत्पादों, उनके रूप, कार्यों और प्रत्येक की कीमत की जानकारी प्राप्त कर उस पर दस्तावेज़ तैयार करें।
3. उपर्युक्त क्रियाकलाप 4.1 में संकलित अनुच्छेदों में प्रस्तुत विभिन्न विचारों पर चर्चा करें और शिल्प-उत्पादों पर अपनी राय लिखें।

क्रियाकलाप 4.2

लुभावने माप-तोल

कक्षा–11

समय–दो कालांश

दिन के आख़िरी दो कलांशों में या स्कूल के समय के बाद स्थानीय बाज़ार में भ्रमण आयोजित किया जाए। सर्वेक्षण के लिए स्थानीय बाज़ार/मेले/हाट में जाने से पहले स्थानीय शिल्पियों द्वारा प्रयुक्त तोलने और मापने के कुछ तरीकों के बारे में निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़ लीजिए।

घी/दूध/फूलों/कपड़े को मापने-तोलने की भिन्न-भिन्न विधियाँ कौन-सी हैं?

सदियों से हम अपने देश में माप-तोल की विभिन्न विधियों का प्रयोग करते आ रहे हैं। इनमें से अनेक अत्यंत उम्दा हैं, विशेषत: वे जो बहुमूल्य धातुओं को तोलने के लिए बनाई गई थीं। इसी प्रकार, लंबाई मापने के लिए शरीर के अंगों की लंबाई के आधार पर कुछ पारंपरिक इकाइयाँ बना ली गई थीं। हम में से अनेक इस बात से परिचित हैं कि कपड़े का व्यापारी एक गज़ मापने के लिए कैसे कपड़े के किनारे को अंगुलियों से पकड़ कर नाक तक ले जाता है या बालिश्त का प्रयोग करता है।

घी विक्रेता, राजस्थान

लघु-कार्यों के लिए सुझाए गए विषय

1. आपके स्थानीय बाज़ार/मेले/हाट में वस्तुओं को तोलने और मापने के विभिन्न तरीकों का अन्वेषण करें। अपने सहपाठियों के साथ, मिलकर चार्ट, फोटोग्राफ आदि द्वारा इनका प्रदर्शन अन्य छात्रों के लिए करें।
2. उपभोक्ता और निर्माता के हित सुरक्षित रखते हुए तोलने और मापने के वैकल्पिक तरीके विकसित करें।

फूल विक्रेता, तमिलनाडु

क्रियाकलाप 4.3

बाज़ार का सर्वेक्षण

कक्षा–11
समय–एक कालांश

शिल्पकार अपने शिल्प-उत्पादों के लिए कच्ची सामग्री कहाँ से प्राप्त करते हैं?

निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़िए। इसमें उन कुछ समस्याओं का वर्णन किया गया है, जिनका सामना बहुमूल्य धातुओं के शिल्कारों को सामग्री खरीदने तथा प्राप्त करने में करना पड़ता है।

कच्चे माल की खरीद

चाँदी का व्यापार और बहुमूल्य धातुओं की आपूर्ति सदैव से सर्राफ़ों तथा महाजनों के हाथों में थी और अब भी है, जिनके बिना सारा ढाँचा ही ध्वस्त हो जाएगा। ये लोग सारे भारत के स्थानीय बाज़ारों में बहुमूल्य वस्तुओं का वितरण करके यह सुनिश्चित करते थे कि सभी उत्पादन-केंद्र अपनी ज़रूरतों के लिए उन पर आश्रित रहें।

भारत में सदा से ही पंजीकृत सर्राफ़ ही बड़ी संख्या में रहे हैं और आज भी उनकी संख्या 12,000 से अधिक है। वे महाजनों के रूप में भी काम करते हैं और सामान्यत: ब्याज की बहुत ऊँची दरें वसूल करते हैं। इन सर्रा. फों के पास प्राय: स्वर्णकार और रजतकार शिल्पी भी होते थे जो उनके लिए मासिक वेतन पर काम करते थे। बहुमूल्य धातुओं का एक औसत शिल्पी प्राय: चाँदी या सोने के स्टॉक में निवेश करने में असमर्थ होता था, अत: सर्राफ़ उन्हें सोना-चाँदी उधार दे देता था। इससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि शिल्पकार सदा सर्राफ़ का कर्ज़दार बना रहे।

नक्काशी युक्त चाँदी का डिब्बा, अठारहवीं शताब्दी

लघु-कार्यों के लिए सुझाए गए विषय

1. स्थानीय बाज़ार में जाकर विभिन्न शिल्पकारों से चर्चा करें कि वे कच्चा माल कैसे प्राप्त करते हैं और उन्हें किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? उस भेंटवार्ता को लिपिबद्ध भी करें।
2. आपके इलाके के महाजन कौन हैं और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में उनकी क्या भूमिका है? कर्ज़ देते समय उनकी क्या शर्तें होती हैं?

लॉस्ट वेक्स पद्धति द्वारा धातु मूर्ति तैयार करने हेतु मोम का प्रतिरूप बनाते हुए शिल्पी युगल

क्रियाकलाप 4.4

परिवर्तन को स्वीकारना

कक्षा–12

समय–एक कालांश

वर्जित विलासिता

हिमालय में पाए जाने वाले वन्य-प्राणी हिमालयी 'आइबेक्स' की ऊन से बनी कश्मीरी शहतूश 'मुद्रिका शाल' इतनी महीन एवं मुलायम होती है कि आदमी की अँगूठी (मुद्रिका) से भी आसानी से गुज़र सकती है। आज, पर्यावरणीय कारणों से और आइबेक्स को लुप्त होने से बचाने के लिए इसका उत्पादन और बिक्री निषिद्ध है। इसे बुनना एक उच्च कोटि की कला थी, अब इसे ओढ़ना एक वर्जित विलासिता है।

भारत में वन्य-जीवों की रक्षा के लिए शहतूश जैसी अन्य किन वस्तुओं को निषिद्ध किया गया है?

प्रवासी कलाकार

वेलु आसारी एक काष्ठ शिल्पी हैं। उनके पूर्वजों की एक लंबी वंश-परंपरा रही है जो मंदिरों के लिए पारंपरिक काष्ठ-नक्काशी का कार्य करते थे। वेलु आसारी के अनुसार, उनके पूर्वज तंजौर में बस गए और ज़िले में मंदिरों के छकड़ों के लिए चित्रों की नक्काशी करने लगे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में तंजौर में मराठा शासन के अंत के साथ ही यह संरक्षण समाप्त होने पर वे करइकुडी चले गए, जो मदुरै के पूर्व में एक छोटा-सा शहर है। वहाँ 'नागरथर चेट्टियार' नामक एक वाणिक समुदाय था। इनका व्यापार सारे दक्षिण-पूर्व एशिया में फैला हुआ था। ये लोग विशाल प्रासादों का निर्माण शुरू कर रहे थे जिसके लिए उन्हें प्रवीण नक्काशों और काष्ठशिल्पियों की ज़रूरत थी। वेलु के पूर्वजों ने इन घरों के दरवाज़ों तथा स्तंभों की नक्काशी में मदद की। मुख्य द्वार का कार्य बहुत पेचीदा था क्योंकि वह बाह्य सार्वजनिक स्थान और भीतरी पवित्र पारिवारिक स्थान के बीच दहलीज का काम करता था। किंतु भारत की स्वतंत्रता के बाद चेट्टियारों ने विदेश में अपना व्यापार बंद कर दिया, अधिकांश लोगों की सारी पूँजी नष्ट हो गई और वे चेट्टीनाड लौट गए। वेलु आसारी के पिता को फिर काम खोजना पड़ा। यह स्थिति बहुत निराशाजनक थी कि जो एक मात्र काम उन्हें मिला था वह पुराने चेट्टियार घरों को खंडित करने का था ताकि सजावटी सामान तथा लकड़ी को बेचा जा सके। उन्हें बीम तथा कड़ियों को तोड़कर नई खिड़कियाँ, दरवाज़े तथा अल्मारी (शेल्फ़) बनाने का कार्य दिया गया।

क्या आपके इलाके में पुराने घरों को तोड़कर वस्तुओं को एंटीक बाज़ार में बेचा जा रहा है?

1980 के दशक के शुरू में वेलु आसारी का परिवार सेलम के निकट कल्लाकुरिची में चला गया, जो चाइना सेलम, थम्ममपट्टी और अरुम्बावूर के चार ग्रामों में से एक था। ये स्थान काष्ठ नक्काशी के लिए एक नए केंद्र के रूप में उभर रहे थे। तेज़ी से विकसित होते हुए बाज़ार की ओर वेलु परिवार भी आकर्षित हुआ। यहाँ सारे भारत से एजेंट अपने शिल्प-निर्यात और घरेलू बाज़ार के लिए अच्छे नक्काशों की खोज में आते थे। विवाह संबंधों के कारण उनके रिश्तेदार भी वहाँ थे।

आजकल वेलु आसारी हिंदू देवी-देवताओं मुख्यत: गणपति व लक्ष्मी के पैनलों की नक्काशी में व्यस्त हैं, जो चेन्नई तथा मुंबई के बाज़ारों के लिए बनाते हैं। पैनल

मध्य-वर्ग के घरों में दीवारों पर सजावट के काम आते हैं। निर्यात के लिए कुछ पैनलों का पुराकालीन परिष्करण (एंटीक फिनिश) किया जाता है। उनका छोटा भाई बेंगलुरु चला गया है और एक फ़र्नीचर निर्माता के लिए कुर्सियों पर नक्काशी तथा अलंकरण कार्य करता है। उसका मानना है कि फ़र्नीचर बाज़ार का भविष्य अच्छा है। उसका वेतन अच्छा है और उसके बच्चों को बेहतर शैक्षिक अवसर उपलब्ध हैं।

वेलु आसारी के चाचा अभी कराइकुडी में ही रहते हैं। वे उत्सवों के दौरान हिंदू देवताओं के लिए जुलूसों के वाहनों और रथों की नक्काशी करते हैं। उनके पास भारतीय मंदिरों के साथ-साथ सिंगापुर तथा अमेरिका के मंदिरों की भी संविदाएँ हैं।

वेलु आसारी कल्लाकुरिची में खुश हैं। गाँव में हो रही नई प्रगति के बारे में उनकी मिली-जुली भावनाएँ हैं। यद्यपि वहाँ अनेक नए कारखाने खुल गए हैं तथापि उनका स्वामित्व विश्वकर्मा समुदाय के लोगों के पास नहीं है। इन कारखानों का स्वामित्व अब उन कामगरों और मज़दूरों के पास है जो पहले उनके अपने संबंधियों के कारखानों में काम करते थे। वे व्यापार में कुशल हो गए हैं और अब स्वयं उद्यमी शिल्पकार हैं। समुदाय की कुछ युवा महिलाओं की ओर से काष्ठ की नक्काशी सीखने की माँग की जा रही है। वेलु आसारी इसका प्रसन्नता से समर्थन करते हैं। उनके जीवन में परिवर्तन ही सतत है इसलिए वे अक्सर सोचते हैं कि उनके लिए भविष्य क्या लाएगा।

—तमिलनाडु के एक काष्ठ शिल्पी,
वेलु आसारी के साथ एक भेंटवार्ता से।

चर्चा और निबंध के विषय

- अपने शहर में शिल्पकारों के प्रवास पर चर्चा कीजिए।
- समाज में बदलती हुई ज़रूरतों का अन्वेषण करके उन्हें स्पष्ट कीजिए कि स्थानीय शिल्प समुदाय ने स्वयं को इन नई माँगों के अनुकूल कैसे बना लिया है? इसका रिकॉर्ड भी बनाइए।

आपके इलाके में नाजुक सामग्री को बाज़ार में कैसे पहुँचाया जाता है?

केले के पत्ते ले जाते हुए, तमिलनाडु

क्रियाकलाप 4.5

शिल्प के लिए यातायात

कक्षा–12

समय–एक कालांश

इससे पहले कि छात्र अपना लघु कार्य शुरू करें और स्थानीय बाज़ार/दुकान/मेला/हाट में जाएँ, उन्हें इस बात के लिए तैयार कर दीजिए कि वे वहाँ जिन लोगों से मिलेंगे जैसे उत्पादक, व्यापारी, उपभोक्ता आदि, उनसे रोचक और प्रासंगिक प्रश्न पूछें।

निम्न अनुच्छेद में सत्या के पिता भारत के विभिन्न प्रदेशों के विशेष डिज़ाइनों तथा बुनाइयों का वर्णन कर रहे हैं।

भारतीय बाज़ार में रंग

सत्या के पिता के पास कहने के लिए अनेक कहानियाँ थीं। वह अपनी साड़ियाँ बेचने और नए ऑर्डर लेने के लिए सारे भारत के बाज़ारों तथा मेलों में घूमते थे। उन्होंने सत्या को उत्तर भारत के एक पवित्र नगर, वाराणसी में करघों पर बनाई जा रही सुनहरी ज़री के ब्रोकेड वाली वैवाहिक साड़ियों के बारे में बताया। कई शताब्दियों पूर्व तीन भाई हथकरघा बुनाई की कला के विशेष कौशल को चीन से लाए थे। इन्हीं के नाम पर इन साड़ियों के नाम से तीन बनारसी साड़ी के डिज़ाइन प्रसिद्ध हुए जैसे-'जैक्वार्ड' (ट्रेडलों तथा शटलों का एक जटिल संयोजन), 'जामदानी' (कोमल फूलों की सजावट से युक्त) और 'तनचोई' (एक अन्य तकनीक) रखे गए। सत्या ने 'इकत' नामक एक अनोखे कौशल के बारे में सुना जिसमें धागे को मोम लगे सूत के धागे के साथ बनाए जाने वाले डिज़ाइन के अनुरूप विभिन्न स्थानों पर बाँधा जाता है और बुनाई से पहले भिन्न-भिन्न रंगों में रँगा जाता है। जब बाने के धागों को ताने पर बुना जाता है तब तोते, मछली, हाथी एवं कमल के फूलों वाले बारीक डिज़ाइन कपड़े की लंबाई में जादुई रूप से उभरते चले जाते हैं। आंध्र में यह साड़ियाँ 'पोचमपल्ली' और उड़ीसा में 'संबलपुरी' नाम से प्रसिद्ध हैं। गुजरात के पाटन में ताने और बाने दोनों धागों को बाँध कर रँगा जाता था और 'पटोला' नामक कपड़ा बनाया जाता था। दुर्भाग्य से अब केवल एक ही परिवार बचा है जो इस कौशल को जानता है। उत्तर भारत में 'चंदेरी' में जुलाहे सूत का इतना महीन कपड़ा बुनते थे कि वह ढाका की मलमल का मुकाबला करता था। उनके ताने में 1800 धागे होते थे। सत्या के पिता ने बताया कि भारत के हर कोने के अपने विशेष डिज़ाइन तथा बुनावटें होती थीं, परंतु साड़ियों के लिए 'कांचीपुरम्' अत्यधिक प्रसिद्ध स्थानों में से एक था।

भारत के विभिन्न प्रदेशों की साड़ियाँ बेच रही दुकानें

क्रियाकलाप

आप जिस बाज़ार में गए थे वहाँ उपलब्ध शिल्प-सामग्रियों की सूची बनाइए।

- भारत/विश्व के नक्शे पर दिखाइए कि वे कहाँ से आई थीं।
- आपके इलाके तक उन्हें कैसे लाया गया?

क्रियाकलाप 4.6

नवीन विचार

कक्षा–12
समय–एक कालांश

निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़िए और इनके अंत में सुझाए गए क्रियाकलाप करिए।

विख्यात मूर्तिकार और कला तथा शिल्प के संग्राहक शंकु चौधरी ने अपनी एक नोटबुक में लिखा था, ''अब स्वयं से यह पूछने का समय आ गया है कि हम शिल्पी वर्ग की संभावित प्रतिभा के साथ क्या करना चाहते हैं।'' उनका संग्रह इस बात की याद दिलाता है कि शिल्प का सामर्थ्य रूप के साथ कार्य के संश्लेषण में निहित है, न कि आज की अति अलंकृत, आवृत्तिमूलक कलाकृतियों के अंधाधुंध उत्पादन में। किसी समय रसोई के उपकरणों में भी शैली तथा उपयोगिता दोनों होती थीं। रचनात्मकता और कल्पनाशील डिज़ाइन का सम्मिश्रण होता था जैसे एक सेवईं बनाने की मशीन को जादुई घोड़े में, सिंदूर की डिब्बी का मछली और मोर के रूप में बदल जाना।

एक छात्र द्वारा बनाया गया टैराकोटा फलक

नवीन सतह

सामुदायिक कला अब स्वयं को वाणिज्यिक क्रियाकलाप के भिन्न तरीकों से प्रस्तुत करने के लिए समायोजित हो रही है। विभिन्न पारंपरिक कला रूपों को किस प्रकार नए रूपांतरण के लिए और फिर त्रिआयामी उत्पादों के लिए अनुकूल बना कर बेचा जा सके ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

पश्चिमी मान्यता के अनुसार कला को स्थायी होना चाहिए। पेंटिंग स्थायी होनी चाहिए और फ्रेम की जानी चाहिए, न कि हर मौसम में धो दिया जाए।

इस विकासक्रम ने एक नए प्रकार की रचनात्मकता को जन्म दिया है। जो चित्रकारी पारंपरिक रूप से दीवारों पर की जाती थी, अब डिब्बे, ट्रे या भिन्न प्रकार के कपड़ों पर भी की जाती है। कुछ लोगों ने तो कथा पुस्तकों को सजाने या एनीमेशन फ़िल्में बनाने के लिए पारंपरिक लोक-चित्रकारी का भी प्रयोग किया है।

भित्ति चित्र, बिहार

यह बदलाव कला के रूप को इतना विकृत न कर दे कि उसका मूल स्वरूप तथा अर्थ ही नष्ट हो जाए। यह विभिन्न समुदायों तथा समाजों की सांस्कृतिक विरासत और कला रूपों को समझने का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

संस्कृति की सराहना, विशिष्ट कला-रूपों के अर्थों तथा महत्त्व को

समझना और एक आधारभूत सम्मान को कला रूपांतरण की नींव होना चाहिए।

सुझाए गए क्रियाकलाप

1. घर से कोई ऐसी शिल्प-वस्तु चुनिए जो नए प्रयोगों के लिए रूपांतरित की गई है। उस वस्तु को कक्षा में प्रस्तुत करते हुए चर्चा कीजिए कि क्या वह रूप, कार्य तथा नए प्रयोग का सही रूपांतरण है।
2. कक्षा में चर्चा कीजिए कि क्या कला स्थायी होनी चाहिए?
3. अपने स्थानीय बाज़ार में इस विचार को स्पष्ट करने वाले उदाहरण खोजिए। संस्कृति की सराहना, विशिष्ट मोटिफ़ों के अर्थ तथा महत्त्व को समझना और एक आधारभूत सम्मान को कला-रूपांतरण की नींव होना चाहिए।
4. अन्वेषण कीजिए कि नई सतहों पर शिल्प का रूपान्तरण एक नए प्रकार की रचनात्मकता की ओर कैसे ले गया है।
5. रूपांतरण के ऐसे उदाहरण खोजिए जिन्होंने कला के रूप को इतना विकृत कर दिया है कि उसका मूल स्वरूप तथा अर्थ ही नष्ट हो गया है।
6. बाज़ार में शिल्प-रूपों के स्थायी और अस्थायी स्थानीय उदाहरणों की खोज कीजिए।
7. किसी शिल्प के नए तरीकों में रूपांतरण का शिल्प, शिल्पकारों और उनकी कुशलताओं पर क्या प्रभाव पड़ता है?
8. जब शिल्प 'बाज़ार' की माँग के अनुसार बदलते हैं तब वह किसका उदाहरण होते हैं-रूपांतरण का, रचनात्मकता का या परंपरा को शिथिल करने का?

विभिन्न उद्देश्यों के लिए हस्तशिल्प के छाते

शिल्प के स्थायी और अस्थायी रूप, तमिलनाडु

क्रियाकलाप 4.7

हथकरघे से मशीन तक

कक्षा–12
समय–एक कालांश

अपने शहर/नगर के निकट किसी विख्यात हथकरघा केंद्र में जाने की व्यवस्था करें। मित्रों/स्कूल से कक्षा के साथ समूह में बुनकरों के किसी परिवार से मिलने की कोशिश करें। अपने साथ किसी अध्यापक या माता/पिता को ले जाएँ। देखें कि बुनकर कैसे काम करते हैं। पुरुष और महिलाएँ आपस में काम को कैसे बाँटते हैं, सूत/रेशम को सुंदर कपड़े में कैसे बदला जाता है, बुनकरों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, और उनमें से कितनों की पहुँच स्कूलों और कॉलेजों तक है? आपने जो सीखा, उस पर एक निबंध लिखें।

इसी प्रकार एक समूह में, अपने आसपास की किसी आधुनिक कताई मिल में जाएँ। यह देखें कि हथकरघा बुनकरों की आधारभूत बुनाई तकनीकें मशीनों द्वारा कैसे की जाती हैं। मिल का मालिक कौन है? मिलों का स्वामित्व और नियंत्रण सामान्यतया किसके पास होता है? क्या बुनकर समुदाय के लोग कपड़ा निर्माण करने वाली फैक्टरियों के मालिक हैं? यदि नहीं तो क्यों नहीं? इन मिलों में कौन काम करता है? क्या केवल बुनकर समुदाय के लोग यहाँ काम करते हैं? यदि पारंपरिक बुनकर मिल में काम करते हैं तो वहाँ उनकी क्या भूमिका है?

हथकरघे पर बुनाई, असम

चाक के प्रयोग के बिना मृत्तिका-पात्र बनाना, असम

क्रियाकलाप 4.8

शिल्प-स्त्रियों और पुरुषों की भूमिका

कक्षा–12
समय–एक कालांश

अनेक व्यवसायों में पुरुष और महिलाएँ काम में बराबर की भागीदारी करते हैं। बुनकर समुदाय में, महिलाएँ समान रूप से शामिल होती हैं। श्रम का विभाजन मुख्यत: पितृसत्ता का परिणाम होता है, जिसमें किसी परिवार अथवा समाज में पिता अथवा पुरुष सदस्यों का प्रभुत्व होता है। वे ही उत्पादन के साधनों को नियंत्रित भी करते हैं।

सुझाए गए क्रियाकलाप

- छात्र एक ही शिल्प और उसके उत्पादन, बिक्री आदि में पुरुषों तथा महिलाओं की भिन्न-भिन्न भूमिकाओं का अध्ययन कर सकते हैं ।
- आपके आस-पड़ोस में कौन-से शिल्प विशिष्ट रूप से पुरुषों के साथ और कौन-से महिलाओं के साथ जुड़े हुए हैं?
- एक ही प्रकार की शिल्प-कला में काम कर रहे पुरुषों तथा महिलाओं की वेतन विसंगति पर जानकारी एकत्र करिए।

क्रियाकलाप 4.9

शिल्पों की स्थिति

कक्षा–12

समय–एक कालांश

एक स्थापति के साथ वार्तालाप

तिरुनेलवेली, तमिलनाडु में भगवान विष्णु को समर्पित एक छोटा किंतु भव्य मंदिर है। मंदिर के पारंपरिक वृतांत में यह दावा किया गया है कि यह किसी प्राचीन युग (sthala purana) का है किंतु उसकी स्थापत्यकला से प्रकट होता है कि वह अर्वाचीन मूल का है-अठारहवीं शताब्दी से पहले का नहीं है। संभवतः इसका निर्माण वर्तमान आंध्र और कर्नाटक के ब्राह्मणों द्वारा किया गया था, जो मंदिर के सामने वाली गली में रहते थे। ये ब्राह्मण अब इस परिदृश्य से लुप्त हो चुके हैं और अपने पीछे एक विलुप्त होती परंपरा छोड़ गए हैं। अब मंदिर का नियंत्रण स्थानीय लोगों के हाथ में है। इस समय इसका तेज़ी से जीर्णोद्धार हो रहा है जिसका नेतृत्व एक जोड़ी कर रही है। इनमें से एक श्रद्धालु स्नातक और एक समर्पित कर्मचारी है जिसे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि वह नास्तिक है। यह समर्पित जोड़ी मंदिर के प्रवेश पर एक पाँच-मंज़िला गोपुरम् का निर्माण करना चाहती है। मंदिर जाने वाली सड़क इस विशाल योजना के फलस्वरूप मलबे से अवरुद्ध है किंतु यहाँ के निवासियों को इससे कोई शिकायत नहीं है। मंदिर के आस-पास के पथों पर भारी पत्थर बिखरे पड़े हैं जो गोपुरम् का आधार बनेंगे।

निर्माण-कार्य का पर्यवेक्षण करने वाला स्थापति (master builder) लंबा और वाचाल है। उसका थोड़ा-सा लंगड़ापन उसकी लंबाई को और उभारता है। उसकी वाचालता उसकी सुरीली आवाज़ द्वारा कोमल हो जाती है। उसका चेहरा

ग्रेनाइट की चट्टान पर उत्कीर्ण गंगावतरण का दृश्य, महाबलिपुरम, तमिलनाडु

बुढ़ापे की झुर्रियों से अप्रभावित और ताज़ा दिखाई देता है। मैं उससे यह कहता हूँ तो वह हँस पड़ता है, ''मैं जहाँ हूँ, वहाँ पहुँचने के लिए मैंने बहुत संघर्ष किया है, सर। स्थापति के रूप में मेरा बीस वर्ष से अधिक का अनुभव है। मैं विश्वकर्मा नहीं हूँ और जन्म से चेट्टियार हूँ।''

उसका यह अंतिम वाक्य हैरानी की बात है। दक्षिण में देवस्थान जैसे पवित्र निर्माण पर पूरी तरह विश्वकर्मा समुदाय का एकाधिकार है। स्थापत्य कला का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा जाता है और इसे इस सुगठित समुदाय की सीमाओं के भीतर गोपनीयता से रखा जाता है। इस विधि से स्थापत्य कला की कोई विशेष हानि नहीं हुई है। छठी शताब्दी तक पुराने दक्षिण भारतीय मंदिरों की प्रचुरता से यह तथ्य स्पष्ट है।

''मुझे इस स्तर तक पहुँचने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा था। प्रारंभ में मेरे गुरु मुझे इस कला के गुर सिखाने के लिए अनिच्छुक थे। मूलत: मैं छेनी बनाने की क्षुद्र तकनीक सीखने के लिए भट्टी तक सीमित था। भट्टी से बाहर निकलने और अपने गुरु को यह विश्वास दिलाने में मुझे बहुत समय लगा कि मैं एक आदर्श शिष्य बनने योग्य हूँ।''

उसने यह भी कहा, ''अब मैं उनका प्रमुख शिष्य हूँ। मैंने अनेक विख्यात मंदिरों में काम किया है। श्रीरंगम व पलानी में मैंने इस कला को परिश्रम से सीखा है।''

''इस विषय की पुस्तकें कहाँ से लेते हो?''

''पुस्तकें? कौन-सी पुस्तकें? सर, ज्ञान तो अभ्यास और वर्षों के प्रशिक्षण से आता है। मुझे केवल यह खेद है कि मैं अपने गुरु को यह विश्वास नहीं दिला पाया कि मुझमें संस्कृत में लिखी गई शिल्प-शास्त्र की पुस्तकें पढ़ने की योग्यता भी है।''

''क्या तुम्हारे मास्टर को संस्कृत आती है?''

''हाँ, आती है। लेकिन संस्कृत अध्ययन केवल विश्वकर्मा समुदाय के बालकों के लिए ही है। मैं तो, आखिर, निम्न जाति का चेट्टियार हूँ। उच्च वंश का चेट्टियार भी नहीं।''

''क्या तुम अपने गुरुजी से नाखुश हो?''

''मैं नाखुश क्यों होने लगा? वह तो मेरे भगवान हैं। यह तो मेरा दोष है कि मैं उनकी आशाओं पर खरा नहीं उतरा। मैं चाहता हूँ कि मेरा बेटा शिल्प-शास्त्र के ग्रंथों को समझे। मैं उसे शीघ्र ही प्रशिक्षित करना चाहूँगा।'' फिर उसने उत्कंठित होकर कहा, ''और उसके लिए संस्कृत का एक शिक्षक खोजूँगा।''

मंदिर का पिछवाड़ा अनेक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ है, जहाँ पाषाण का काम करने वाले मिस्त्री ग्रेनाइट के विशाल खंडों पर काम कर रहे हैं।

''क्या वे विश्वकर्मा हैं?''

''नहीं, नहीं'', वह हँस पड़ा और बोला वे सभी करईकुडी नगर के निकट के दो गाँवों से आए हैं। इन पत्थरों को तराशने के लिए विशेष कौशल की ज़रूरत है जो केवल इन ग्रामवासियों के पास है।

ब्रैकेट का क्या काम होता है?

विभिन्न प्रदेशों की अलग-अलग सामग्री से बनाए गए ब्रैकेट
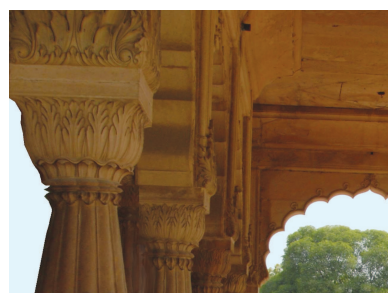
''क्या उनमें से कोई मास्टर निर्माता बन पाएगा? यदि उनमें से कोई इच्छुक हो और इतना ही उत्साही हो जितने तुम थे तो क्या तुम किसी को प्रशिक्षित करोगे?'' ''यह शायद मेरे जीवन काल में नहीं होगा। हो सकता है कि मेरे पुत्र या पौत्र को शिष्य के रूप में पत्थर का काम करने वाला कोई परिश्रमी मिस्त्री मिल जाए। इसमें समय लगता है।''

''मैं संभवता महसूस करता हूँ कि जाति की इमारत उतनी ही कठोर होती है जितनी कि ग्रेनाइट की ऊपरी सतह जिसके पत्थर के ये खंड तोड़े गए हैं। साधारण लोग इस दीवार को गिराने की कोशिश करते हैं और नए-नए औज़ार खोजते हैं। वे जानतें हैं कि यह काम कठिन और समय साध्य है। उन्हें कोई जल्दी भी है। वे एक-एक खंड को तराशने के लिए तैयार हैं।

मृद्‌भांड निर्माताओं के कुशल समुदाय को उत्तरी भारत के अधिकांश भागों में 'कुम्हार' कहते हैं, तेलुगु में 'कुंभार' और तमिल में 'कुशवार'। इन्हें उत्तर वैदिक काल में 'निम्न' जाति का माना जाने लगा था। पंक, मृदा तथा मृत्तिका के साथ काम करने वाली अधिकांश जातियों के बारे में यह सोचा जाता था कि वे दूषित वस्तुओं के संपर्क में रहती हैं। अत:, किसी भी प्रकार के उत्पादन कौशल से जुड़ी हुई जातियों को निम्न माना गया है। वैज्ञानिक ज्ञान और दस्तकारी के कुशलता आधार के बावजूद भारत में बुनकर समुदाय को 'निम्न' जाति का माना जाता है यद्यपि किसानों, कुम्हारों और चर्मकारों की तरह बुनकर भी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में पथ-प्रदर्शक रहे हैं। तथापि वह सामाजिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा का अभाव झेलता रहा है।

बुनकर आज भी गरीब बने हुए हैं। अनेक राज्यों में बुनकर आत्महत्या कर रहे हैं क्योंकि वे उस ऋण को नहीं चुका पाते जो उन्होंने मजबूरी में लिया था। आज वैश्वीकरण के युग में ऐसे समुदाय के आधुनिकीकरण, अजीविका तथा अस्तित्व बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि उसकी पहुँच सर्वोत्तम शिक्षा तथा रोज़गार के अवसरों तक हो।

– *पी. अनंतकृष्णन,* द पॉयनियर, 15 मार्च, 2009

आँकड़ों का संकलन (डाटा-बैंक बनाना)

बड़े भांडों का निर्माता, महाराष्ट्र

...हमें हर प्रकार की कला तथा शिल्प रीति का विस्तृत एवं सर्वांगीण सर्वेक्षण। उनके रूपों तथा कार्यों, द्रव्यों तथा तकनीकों, रीति में परिवर्तनों और प्रत्येक की विशेषताओं का भी तैयार करना होगा। इन सर्वेक्षणों का मुख्य उद्देश्य यह होगा कि उनके बारे में जानकारी का एक संसाधन बैंक बनाया जाए। उसमें संग्रहालय से लिए गए आदर्श नमूनों और प्रयोग में लाई गई सामग्री तथा औज़ारों को शामिल किया जाए जो भावी पीढ़ियों को इनकी पूरी छवि देने के लिए पर्याप्त हों। यद्यपि उनकी रीति का अंत हो जाए या छोड़ दी जाए तथापि या शक्ल बदल दी जाए। यह एक बीज बैंक के रूप में काम कर सकता है जो आने वाले समय में, आवश्यकता पड़ने पर, उनको पुनर्जीवित

मृत्तिका-पात्र बनाने की कार्यशाला, महाराष्ट्र

या पुनर्सज्जित करने की भी व्यवस्था करेगा। इसके अंतर्गत जो छवि प्रस्तुत की जाएगी वह (निर्जीव) व्यवसायी और हमारे समय की (उदासीन) जनता को उनका सच्चा मूल्य समझने और उनकी सूक्ष्मताओं पर प्रतिक्रिया करने हेतु पुनर्शिक्षित भी करेगी और सबसे बढ़कर गैर-पारंपरिक आकाँक्षियों के एक नए समूह का या कलाकार का ध्यान शहरी समाज की ओर आकर्षित कर सकती है।

– के. जी. सुब्रमण्यम्
कला और संस्कृति पर निबंध
''द मैजिक ऑफ़ मेकिंग''

लघु कार्यों के लिए सुझाए गए विषय

1. चर्चा करें कि शिल्पकारों का दर्जा इतने निम्न स्तर का क्यों है?
2. अपने पड़ोस में यह जानने के लिए किसी शिल्पी समुदाय का अध्ययन करें कि क्या पिछले 20 वर्षों में कोई सामाजिक/आर्थिक परिवर्तन हुआ है?
3. एक शिल्पी समुदाय का अध्ययन कर शिक्षा, स्वास्थ्य, आहार, संसाधनों तथा सुविधाओं तक उनकी पहुँच पर टिप्पणी लिखें।
4. आपके प्रदेश में शिल्पी समुदाय की स्थिति सुधारने के लिए समाज/पंचायत/नगरपालिका द्वारा चलाई जा सकने वाली तीन क्रियाकलापों वाली एक योजना तैयार करें।